

शक्ति अपभारण का विकास (Evolution of Power concept) - प्राचीन

काल से ही राजविज्ञान में शक्ति - अपभारण का विवेचन किया जाता रहा है। बुक्रात, लीसी तथा अन्य दर्शनियों ने शक्ति पर आन्वीय दृष्टिकोण से विचार किया है। ग्रीसी, रोमन, अरस्तू, मेकिमावेली, होब्स, नील्स, किबर्टे, आदि ने शक्ति का शशास्त्रीय विवेचन किया है। होब्स ने अनुभव आधार की सामान्य सृष्टि पर इस प्रकार टिप्पणी की है - "सच्ची शक्ति केवल शक्ति में पाकर परिपूर्ण होने वाली, एक के बाद दूसरी शक्ति प्राप्त करने की शक्ति एवं अदम्य रहता होती है।" मेकिमावेली का विचार था कि शक्ति प्रेम से ही बढ़कर आनन्द भवन को प्रभावित करता है। अतः राजा को प्रजापरसल ही नहीं अपितु सेवा होना चाहिए कि लोग उससे सदा डरते रहें। जब तक वे डरते तभी तक राजा के प्रेम और और उसके आदेशों को मानेंगे। चार्ल्स डीरिगम, कैरलिन लासवेल, रमल, रॉबर्ट इडल, आदि ने राष्ट्रीय सन्दर्भ में और मॉर्गन्थो, जार्ज कैनेन तथा राडनॉल्ड नेबूर, आदि ने अन्तरराष्ट्रीय स्तर में शक्ति का विवेचन किया है। नील्स ने 19 वीं सदी में शक्ति की दृष्टि का सुणधान किया।

प्रथम विश्वयुद्ध के पहले एरिक कोकमान ने अपनी पुस्तक में लिखा कि राज्य के तीन मुख्य लक्ष्य हैं - शक्ति, सैन्य, शक्ति - प्रसार और शक्ति - प्रदर्शन। अपने विश्व - राज्य के आदर्श को इसलिए आस्वीकार कर दिया कि विश्व - राज्य में शक्ति के विकास, उसकी वृद्धि और उसके प्रदर्शन की कोई सम्भावना नहीं हो सकती। फ्रेडरिक वाटकिन्ज का तर्क है कि राजनीतिशास्त्र का सम्बन्ध केवल उन ही बातों से है जिनके अद्ययन से शक्ति की समस्या को समझा जा सके। हेराल्ड लासवेल ने अपनी पुस्तक पॉलिटिक्स - इ ग्रीट्स इफ, डैन' में कहा है कि "राजनीति का अद्ययन प्रभाव और प्रभावशाली का अद्ययन है। इसी प्रकार

Dr. Animesh Kumar

डेविड ईस्टन ने भी राजनीति विज्ञान में शक्ति के अभाव को स्वीकार किया है। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों पर परम्परागत दृष्टि के विचार करने वाले ई. एच. कार. जार्ज व परलन बलगर, क्विंसी राइस, मार्टिन पाइट जैसे लेखकों तथा अन्य विचारकों ने जो कुछ भी विचार किया है वह राजविज्ञान के शक्ति सम्बन्धी यज्ञ का अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के क्षेत्र में प्रसारण है। पुनः प्रो. हेन्स डे. मॉन्टो ने जो अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों पर शक्ति के दृष्टिकोण से सुसम्बद्ध दृष्टि से अपने विचार प्रस्तुत किये हैं।